ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | September - 2016

Review Of Research

शांति के लिए शिक्षा

डॉ. धीरज परमार

सहप्राध्यापक ,आणंद एज्युकेशन कोलेज, आणंद.

प्रस्तावना :

मनुष्यकी विकासयात्रामें शिक्षाकी अहम् भूमिका रही है । आदिमानवसे आधुनिकमानवकी प्रगति में विज्ञान और तकनीकी शिक्षाका बडा प्रभाव रहा है । आधुनिक समाज में भौतिक उपल्बधियां का खडकला हो रहा है । आज मनुष्य का जीवन बडा संकीर्ण हो रहा है । घरका विस्तार बडा हो रहा है लेकिन दिल छोटा होता जा रहा है । मनुष्य के सामने कई सारी समस्या मुंह खोलके खडी है । आधुनिक समाजमें से दया, प्रेम, करुणा भाईचारा, सहकार, सहिष्णुता, संयम, क्षमा, जैसे मानवीय गुणो और मूल्योकी कमी महेसूस हो रही है । विज्ञान और तकनीकी विकास से मनुष्य के पास सबकुछ होने के बावजूद उसके पास शांति नहीं है । शांति मनुष्य जीवनका अंतिम ध्येय है । धनवान और निर्धन सभीको शांति चाहिए । मनुष्य के पास धन-दौलत, झवेरात, माल-मिलकत, एशोआराम हो लेकिन शांति ना हो तो एसे जीवन का अर्थ क्या ? समाज में असहिष्णुता, धर्मान्धता, जातिभेद, कटुता, आतंकवाद, कोमी वैमनस्यता जैसी समस्याए नजर आती है । शिक्षा मनुष्यको बदलती है । अच्छी शिक्षा से मनुष्यमे परिवर्तन आता है । शांति बनाये रखने मे और बढानेमें शिक्षा प्रभावशाली माध्यम है । इस वक्त शाला, महाशाला, और शिक्षक-प्रशिक्षक संस्थाए शांति के लिए शिक्षा दे वो अत्यंत आवश्यक है । राष्ट्र और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोगो के बीच जो खंडितता है , जो संघर्ष है, अलगाववाद है उसको शिक्षा के माध्यम से हम मिटा सकते है । प्राथमिक, माध्यमिक, महाशाला और धर्मसंस्थाए शांति के लिए शिक्षाका व्यवहारिक रुप से कुछ कार्यक्रम और प्रवृत्तिओ का आयोजन करे तो इस समस्याका हल मिल सकता है ।

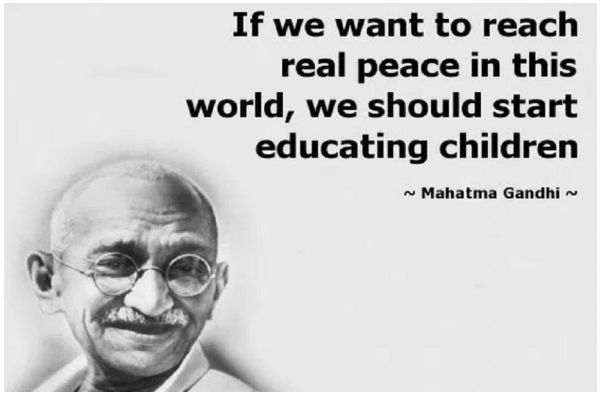

इतिहास प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध की भयानकता का गवाह है । हररोज विश्वके कोई न कोई कोने मे हिंसाकी घटना होती है । अमेरिका की नौ अगियार की घटना, छब्बीस नवेम्बर की मुंबई घटना, गुजरात के अक्षरधाम पे हमला, भारतीय संसद पर हमला ये सारी घटनाए हमारी शांति छीन लेनेवाली है । आज मनुष्य भयमें जी रहा है । मनुष्य मनुष्यको क्यो मार रहा है ? ये प्रश्न के उत्तर के लिए सोचना अति आवश्यक लगता है । विश्वमें एसा वातावरण खडा होना चाहिए कि सभी जातिके लोग सुरक्षित हो । नात-जात, धर्म और लिंगके भेद दूर हो जाए । लडाई-झगडे का नाम ही ना रहे । सभी धर्मके लोग एक दूसरे के अस्तित्व का सन्मान करे । सभी लोगो के बीच मधुर संबंध संपन्न हो और विश्वमें शांतिका माहोल बने ।

शिक्षाका उदेश्य ये है कि मनुष्य शांति से जीये और उसका सर्वांगीण विकास हो सके । आज हमारी शिक्षा संस्थाए छात्रोको विषयवस्तु पढाते है लेकिन गुणवत्तायुक्त जीवन और जीवन कौशल्यो की शिक्षा मे पूरी तरह से सफळ नहीं है । भारतीय संस्कृति अतिथि देवो भव: और वसुद्यैव कुटुम्बकम् की भावनासे जुडी हुई है । भारतीय धर्मग्रंथोमे भी - शांतिमय, सुखदायी और निरामई जीवनके बारे में वर्णन किया गया है । बाईबिलमे भी इसा मसिह कहते है कि मै पृथ्वी पर शांति देने आया हूं, सेवा लेने नहिं परंतु सेवा करने के लिए आया हूँ । हमारे राष्ट्रपिता गांधीजीने कहा था, में शांति में विश्वास रखता हूँ यदि आज शांति नहीं है तो कल कोई जीवन नहीं होगा । कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोरने शांतिनिकेतन संस्था की स्थापना की थी । भारत प्राचीन कालसे शांति के बारेमें सोचनेवाला देश है । द्वितीय विश्वयुद्ध के बारे २४ अक्टूबर १९४५ में संयुक्त राष्ट्रो (UN) की स्थापना की गई ।

यु.एन.ने १९४५ में मानव अधिकारो के मुद्दे पर विचार किया । विश्व के लोग एक दूसरे के साथ समझदारी से व्यवहार करे, एक दूसरे को सहयोग दे ये आवश्यक है इसीलिए शिक्षा एक बहुत अच्छा साधन है । यु.एन.की पेटासंस्था युनेस्कोने भी शांति शिक्षाके लए प्रस्ताव पेदा किया था । विश्व के हरेक देश को समजमें आया है कि केवल शांति शिक्षासे हमारी समस्याओका निराकरण हो सकता है । फ्रान्स के पेरिस में कई साल पहेले नोबेल पारितोषिक विजेताओ की बैठक हुई थी । इस में आंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो समस्या है उसका हल क्या हो सकता है ये प्रश्न के बारे में विचार विमर्श हुआ और सभी ने प्रश्न का उत्तर बताया कि गांधीयन विचारधारा ''सत्य और अहिंसा'' को जानना और उसका पालन करना ।

शांति के लिए शिक्षा बडा साधन माना जाता है। शिक्षा से सामाजिक परिवर्तन आता है। समाज में पलनेवाली कई सारी बुराईयो को शिक्षा के माध्यम से हरा सकते है। समाजमें अशांति है उसका हल शिक्षाके माध्यम से मिलता है। समाज में विविधताए है उसको संभालने के लिए शिक्षा एक मात्र उपाय है।

विश्व मे विभिन्न संस्कृतियाँ है जिससे भाषा, धर्म, रंग, स्वानपान, कपडे, रीत रिवाज में भेद है लेकिन शिक्षा उस भेद होते हुए भी एक दूसरे के बीच संवाद, समझदारी और सांमजस्य स्थापित करती है। शिक्षा के माध्यम से सभी के दिलोमें हकारात्मकता के बीज बोये जा सकते है जिस से सभी लोग एक होकर रहे, संगठित रहे, एकदूसरे को सहयोग दे और शांतिका माहोल बना रहे।

शांति के लिए शिक्षाके हेतु एवं उदेश्य इस प्रकार है।

- शांति की शिक्षासे विश्व एक परिवार है एसी भावना का विकास करना।
- मनुष्य अपने जैसे मनुष्य के अस्तित्व का स्वीकार करना सीखे।
- Everything is connected की भावना बच्चो में बढे।
- मनुष्य दूसरे मनुष्य पर आधारित है एसी समझ का विकास करना।
- शांति के लिए कार्यरत संस्थाए और व्यक्तियोकी जानकारी बच्चो को देना।
- युद्ध, लडाइ और परमाणु हथियारो की भयानकता के बारे माहिती देना।
- नोबल शांति पुरस्कार हासिल करनेवाले विजेताओके कार्य को जानना।

वर्तमान मे शांतिके लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रोकी एक अंगभूत संस्था UNESCO ने बताया था कि युद्ध की शरुआत मनुष्य के मन में होती है इसलिये शांति के लिए भी मनुष्यके मन को तैयार करना होगा।

शांति शिक्षासे विश्व के लोगो के बीच विश्वास का वातावरण खडा होता है।

शांति शिक्षासे विभिन्नता में भी एकता है ये प्रस्थापित होता है और लोगो में दया, प्रेम, करुणा, सहयोग, परोपकार, सहिष्णुता की भावना बढती है। लोग एकदूसरे के धर्म के प्रति सन्मान और सदभाव रखने के लिए तैयार होते है। कोई कविने लिखा है कि

कुरान में से कृष्ण, गीता में से खुदा,
मानो तो मक्का से राम निकलते है,
हरएक व्यक्ति को समज लो तीर्थ,
तो खडे हो वहां से धाम निकलता है।

चलो हमसब मिलकर पूरे देशमें और विश्वमे शिक्षा के माध्यसे शांति बनाये रखने का उमदा और पवित्र कार्यमें सामिल हो जाये।

संदर्भसूची

१) अढिया जितेन्द्र (२००३) प्रेरणा के झरने, अढिया इन्टरनेशनल, अमहदाबाद.
२) अढिया जितेन्द्र (२००४) स्नेह के झरने, अढिया इन्टरनेशनल, अहमदाबाद.
३) खेरा शिव (२००३) जीत आपकी, मेकमिलन इन्डिया लिमिटेड, अहमदाबाद.
४) दवे जयेन्द्र (१९९३-९४) शिक्षाकी तात्विक और समाजशास्त्रीय, आधारशिला, बी.एस प्रकाशन, अहमदाबाद।
५) पटेल हरिभाई (१९९७) मूल्यशिक्षा, गूर्जर प्रकाशन, अहमदाबाद.
६) www. unicef.org/education/files/peaceeducation.pdf
७) www. peacedirect.org